हीरो एंटरप्राइज़ की मेज़बानी में आयोजित माइंडमाइन समिट में शीर्ष नेता और विचारक शामिल हुए

नयी दिल्ली। हीरो एंटरप्राइजेज़ द्वारा स्थापित एक स्वतंत्र थिंक टैंक माइंडमाइन इंस्टीट्यूट द्वारा आयोजित भारत के सबसे प्रभावशाली विचार मंच माइंडमाइन समिट का 11वां संस्करण आज राष्ट्रीय राजधानी में शुरू हुआ। इस साल के इस दो दिवसीय समिट का विषय है 'अवरोध-भारत के लिए नयी सामान्य चीज़?' जिसमें आज पहले दिन सरकार में वरिष्ठ मंत्री, उद्योगपति और विभिन्न क्षेत्रों से विचारक अपने विचारों का आदान प्रदान करने के लिए शामिल हुए। इस सम्मेलन का उद्घाटन माननीय शहरी विकास, आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन मंत्री श्री वेंकैया नायडू ने किया। इस अवसर पर माननीय रेल मंत्री श्री सुरेश प्रभु भी मौजूद थे। समिट के दौरान श्री सुनील कांत मुंजाल ने इंपैक्ट इनवेस्टिंग के क्षेत्र में विश्व की अग्रणी और आविष्कार-इंटेलकैप ग्रुप का हिस्सा आविष्कार द्वारा शुरू किए गए आविष्कार भारत फंड में 100 करोड़ रुपये का निवेश करने की भी घोषणा की। यह निवेश रोज़गार, शिक्षा एवं कौशल, पर्यावरण, स्वास्थ्य और वित्तीय समावेश के संदर्भ में आज इस देश के समक्ष मौजूद प्रमुख चुनौतियों से निपटने की श्री मुंजाल की प्रतिबद्धता दर्शाता है।

इस समिट का उद्घाटन करते हुए माननीय शहरी विकास, आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन मंत्री श्री वेंकैया नायडू ने कहा, ''सोशल मीडिया के ज़रिये लोगों की शिकायतें दूर करना हमारी शीर्ष प्राथमिकताओं में से एक है। वास्तव में इंस्टाग्राम पर हमारे प्रधानमंत्री के सबसे ज्यादा फॉलोअर्स है, अमेरिकी राष्ट्रपति से भी ज्यादा। हम अवरोध के युग में जी रहे हैं जोकि इस सरकार की नीति निर्माण प्रक्रिया में भी आता है। वास्तव में, दुनियाभर की बाधा हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कार्य करने के तरीके में सबसे अधिक आती है। जहां विमुद्रीकरण भ्रष्टाचार के खिलाफ एक लड़ाई है, वित्तीय लेनदेन का डिजिटलीकरण इससे सुनिश्चित हुआ है। जीएसटी एकल कर प्रणाली का एक क्रांतिकारी क्रियान्वयन है। डिजिटल भुगतान चैनलों के लिए अभियान और वित्तीय समावेश से भारतीयों को प्रत्यक्ष लाभ अंतरण सुनिश्चित होगा और उन्हें औपचारिक वित्तीय व्यवस्था के दायरे में लाएगा। वित्तीय समावेशी अभियान के तहत 28 करोड़ बैंक खाते पहले ही खोले जा चुके हैं।''

सम्मानित अतिथि माननीय रेल मंत्री श्री सुरेश प्रभु ने कहा, ''भारतीय रेल की भविष्य में महत्वाकांक्षी योजनाएं हैं। हम अगले पांच साल में ढांचागत विकास में 140 अरब डॉलर का निवेश करने की संभावना तलाश रहे हैं। सभी मीटर गेज पटरियों को ब्रॉड गेज में परिवर्तित किया जाएगा। हम भारतीय रेल के संपूर्ण डिजिटलीकरण की दिशा में काम कर रहे हैं जिससे अरबों डॉलर की बचत होगी। रेलवे पटरियों के नवीकरण और पटरियों में टूटफूट का पता लगाने को नवीनतम प्रौद्योगिकी अपनाने के लिए करीब 10,000 करोड़ रुपये खर्च करेगी जिससे दुर्घटना की दर शून्य स्तर पर लाने में मदद मिल सके।''

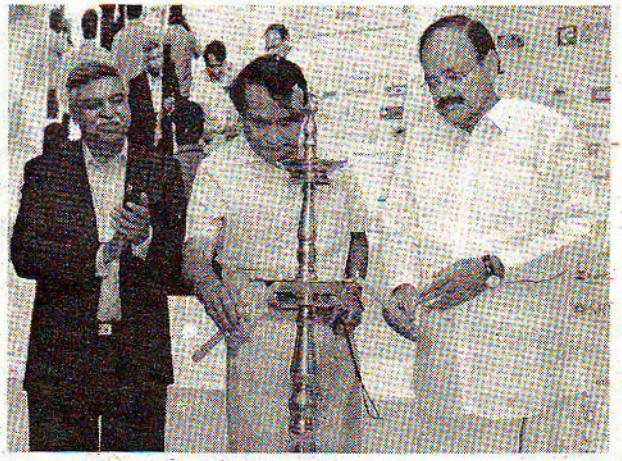

वाणिज्य एवं उद्योग राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती निर्मला सीतारमण ने कहा, ''मुझे नहीं लगता है कि वैश्वीकरण पीछे हटने की राह पर है। निश्चित तौर पर कुछ चुनौतियां हैं क्योंकि वैश्वीकरण की वजह से संचित धन से ज्यादातर बहुराष्ट्रीय कंपनियों को लाभ हुआ है और इसका सभी में समान वितरण नहीं हुआ है। इसके परिणाम स्वरूप कुछ हद तक यह पीछे खिसका है। हमारे पास सेवाओं के व्यापार के लिए एक वैश्विक रूपरेखा नहीं है। भारत विश्व व्यापार संगठन में सेवाओं पर एक व्यापार सुगमता समझौता (टीएफए) पर इस बहुपक्षीय निकाय में सभी प्रमुख मुद्दों को लेकर अगली कार्ययोजना के लिए रणनीति तैयार करने की योजना बना रहा है। दुनियाभर में संतृप्त अर्थव्यवस्थाओं को भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं से सेवा के व्यापार की जरूरत पड़ेगी।'' श्री जयंत सिन्हा ने विस्तारपूर्वक कहा, ''भारत में विमानन उद्योग एक उगता सूरज है। हम उड़ान या 'उड़े देश का हर नागरिक' की दिशा में काम कर रहे हैं जिसमें महानगरों और टियर 3 एवं टियर 4 शहरों जैसे शिमला, गोरखपुर, कानपुर आदि के बीच प्रभावी क्षेत्रीय हवाई संपर्क का निर्माण किया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री मोदी 27 अप्रैल को उड़ान लांच करेंगे और हम एक साल में सभी छोटे शहरों में 33 नए हवाईअड्डे जोड़ेंगे। यह केवल 205 करोड़ रुपये की सब्सिडी से हासिल किया जाएगा।''

सिन्हा ने 'हवाई चप्पल पहनने वालों को हवाई जहाज पर बिठाएंगे' के अपने मिशन पर प्रकाश डाला जोकि हमारे प्रधानमंत्री के मिशन 'सबका साथ, सबका विकास' की तर्ज पर है। इस आयोजन में हीरो एंटरप्राइज़ के चेयरमैन श्री सुनील कांत मुंजाल ने कहा, ''अत्यधिक आर्थिक मायूसी की इस दुनिया में भारत दुनिया के बाकी देशों के मुकाबले बेहतर कर रहा है। हालांकि, हमारे लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है। हमने 1990 के दशक से ही वृद्धिशील परिवर्तन से कहीं अधिक की शुरुआत की है। माइंडमाइन में हमने पिछले 10 शिखर सम्मेलों पर नज़र रखने की कोशिश की है और इस दिशा में हम मोड़ पर आगे रहे हैं। आज व्यवस्था को दुरुस्त करने की जरूरत बढ़ रही है और यथास्थिति ज्यादा दिनों तक स्वीकार्य नहीं है। भारत के उभरने और सभी भारतीयों की आकांक्षाएं पूरी करने के लिए क्या वृद्धिशील परिवर्तन ही पर्याप्त है या अवरोध नया नियम है।